विषय-सूची

प्रथम भाग

१. वेदमाता गायत्री की उत्पत्ति १
२. गायत्री-सूक्ष्म शक्तियों का स्रोत है ३
३. गायत्री साधना से शक्ति-कोशों का उद्भव ६
४. गायत्री ही कामधेनु है १०
५. गायत्री और ब्रह्म की एकता ११
६. गायत्री द्वारा सतोगुण वृद्धि के दिव्य लाभ १४
७. महापुरुषों द्वारा गायत्री महिमा का गान १६
८. गायत्री-साधना से सतोगुणी सिद्धियाँ २०
९. गायत्री साधना से श्री, समृद्धि और सफलता २४
१०. गायत्री साधना से आपत्तियों का निवारण २८
११. देवियों की गायत्री साधना ३२
१२. जीवन का काया-कल्प ३५
१३. स्त्रियों को गायत्री का अधिकार ३७
१४. क्या स्त्रियों को वेद का अधिकार नहीं ? ४३
१५. नारी पर प्रतिबन्ध और लांछन क्यों ? ४६
१६. मालवीय जी द्वारा निर्णय ५०
१७. स्त्रियाँ अनधिकारिणी नहीं हैं ५१
१८. गायत्री का शाप, विमोचन और उत्कीलन का रहस्य ५३
१९. गायत्री की मूर्तिमान् प्रतिमा-यज्ञोपवीत ५७
२०. गायत्री साधना का उद्देश्य ६३
२१. निष्काम साधना का तत्त्वज्ञान ६६
२२. इन साधनाओं में अनिष्ट का कोई भय नहीं ६८
२३. साधकों के लिए कुछ आवश्यक नियम ६९
२४. साधना, एकाग्रता और स्थिर चित्त से होनी चाहिए ७२
२५. गायत्री द्वारा सन्ध्या-वन्दन ७४
२६. गायत्री का सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वसुलभ ध्यान ७९
२७. पापनाशक और शक्तिवर्धक तपश्चर्याएँ ८०
२८. गायत्री साधना से पाप-मुक्ति ८४
२९. आत्म-शक्ति का अकूत भण्डार ८९
३०. सदैव शुभ गायत्री यज्ञ ९२
३१. नव दुर्गाओं में गायत्री साधना ९४
३२. महिलाओं के लिए विशेष साधनाएँ ९५
३३. एक वर्ष की उद्यापन साधना ९९
३४. गायत्री साधना से अनेकों प्रयोजनों की सिद्धि १००
३५. गायत्री का अर्थ चिन्तन १०४
३६. माता से वार्त्तालाप करने की साधना १०६
३७. साधकों के स्वप्न निरर्थक नहीं होते १०७
३८. सफलता के लक्षण ११०
३९. सिद्धियों का दुरुपयोग न होना चाहिए ११२
४०. गायत्री द्वारा वाममार्गी तांत्रिक साधनाएँ ११५
४१. गायत्री द्वारा कुण्डलिनी जागरण ११७
४२. षट्चक्रों का वेधन १२१
४३. यह दिव्य प्रसाद औरों को भी बाँटिये १२६
४४. गायत्री से यज्ञ का सम्बन्ध १२७

द्वितीय भाग

१. गायत्री माहात्म्य १३३
२. गायत्री गीता १४५
३. गायत्री स्मृति १५०
४. गायत्री उपनिषद् १६३
५. गायत्री रामायण १७५
६. गायत्री हृदयम् १८४
७. गायत्री पंजरम् १९२
८. गायत्री संहिता १९७
९. गायत्री तन्त्र २०७
१०. गायत्री अभिचार २२७
११. मारण प्रयोग २३०
१२. चौबीस गायत्री २३३
१३. गायत्री पुरश्चरण २३९
१४. नित्य-कर्म २४०
१५. सन्ध्या २४२
१६. गायत्री पूजन २४२
१७. गायत्री ध्यान २४३
१८. गायत्री कवच २४६
१९. न्यास २४८
२०. गायत्री स्तोत्र २४९
२१. गायत्री शाप मोचन २५१
२२. गायत्री हवन २५२
२३. गायत्री तर्पण २५२
२४. मार्जन २५३
२५. गायत्री की २४ मुद्रायें २५४
२६. विसर्जन २५७
२७. अर्घ्यदान २५७
२८. क्षमा प्रार्थना २५७
२९. ब्राह्मण भोजन २५८
३०. गायत्री लहरी २५९
३१. गायत्री चालीसा २६४
३२. आरती गान २६५
३३. गायत्री सहस्रनाम का विज्ञान २६६
३४. गायत्री सहस्रनाम २६६
३५. गायत्री के ऋषि, छन्द और देवता २७६
३६. गायत्री अभियान की साधना २७९
३७. गायत्री वन्दना २८०

तृताय भाग

गायत्री के पाँच मुख : २८२
[देवताओं के अधिक अंगों का रहस्य, पाँच मुखों में पाँच गुप्त कोशों का संकेत ।]

अनन्त आनन्द की साधना : २८४
[वरुण और भृगु का संवाद, पाँच कोशों के ज्ञान से ब्रह्म विभूति की प्राप्ति ।]

गायत्री मंजरी : २८६
[योग साधना की ४६ श्लोकों वाली पुस्तक, जिसकी व्याख्या के रूप में गायत्री महाविज्ञान तृतीय भाग ।]

अन्नमय कोश और उसकी साधना : २९१
[उपवास, आसन, सूर्य नमस्कार की विधि, पंच-तत्त्वों की विशेष साधना, तपश्चर्या ।]

प्राणमय कोश की साधना : ३०९
[प्राणायाम, प्राणाकर्षण की सुगम क्रियायें, तीन बन्ध, सात मुद्रायें, नौ प्राणायाम ।]

मनोमय कोश की साधना : ३२२
[ध्यान, त्राटक, जप साधना, तन्मात्रा साधना]

विज्ञानमय कोश की साधना: ३३८
[सोऽहं साधना, आत्मानुभूतियोग, आत्म-चिन्तन की साधना, स्वर योग ।]

आनन्दमय कोश की साधना : ३५२
[नाद साधना, बिन्दु साधना, कला साधना (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश), तुरीयावस्था का परमानन्द ।]

पञ्चकोशी साधना का ज्ञातव्य : ३६४
[साधना का अन्धानुकरण हानिकारक है, साधना की उपयोगिता और आवश्यकता पर प्रकाश ।]

पञ्चमुखी साधना का उद्देश्य : ३६९
[आत्म-कल्याण के पाँच महान् लाभ, दस भुजाओं से दस दोषों का निवारण ।]

गायत्री साधना निष्फल नहीं जाती : ३७९
[गायत्री साधना का प्रभाव तत्काल, बाधाओं का निवारण, उन्नति के अनेक मार्गों का खुलना ।]

गायत्री का तन्त्रोक्त वाम मार्ग : ३८२
[खतरों से भरा मार्ग, तन्त्र विज्ञान गोपनीय।]

गायत्री की गुरुदीक्षा : ३८८
[मनोभूमि का परिष्कार, गायत्री द्वारा द्विजत्व, मन्त्र दीक्षा, अग्नि दीक्षा, ब्रह्मदीक्षा, परावाणी द्वारा अन्तरंग प्रेरणा, गुरु की महान् जिम्मेदारी ।]